



Puneet Kumar

15 Mar 2006

07:15 AM

Kosi Kalan

Model: All-Dosha-Report

Order No: 119287501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 15/03/2006
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 07:15:00 घंटे
इष्ट _____: 01:51:11 घटी
स्थान _____: Kosi Kalan
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 27:48:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:26:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:20:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 06:54:44 घंटे
वेलान्तर _____: -00:09:00 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:24:51 घंटे
सूर्योदय _____: 06:30:31 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:28:27 घंटे
दिनमान _____: 11:57:56 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 00:23:30 मीन
लग्न के अंश _____: 14:49:05 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: उ०फाल्गुनी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: गण्ड
करण _____: बालव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: टो-टोनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1927	फाल्गुन	24
पंजाबी	संवत : 2062	चैत्र	2
बंगाली	सन् : 1412	चैत्र	1
तमिल	संवत : 2062	पंगुनी	1
केरल	कोल्लम : 1181	मीनम	1
नेपाली	संवत : 2062	चैत्र	2
चैत्रादि	संवत : 2062	चैत्र	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2062	फाल्गुन	कृष्ण 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 1
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:28:09
जन्म तिथि _____ : 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 24:38:51 घंटे
जन्म योग _____ : उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : गण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 28:45:52 घंटे
जन्म योग _____ : गण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 18:18:30 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 23:47:10
भभोग _____ : 67:16:46
भोग्य दशा काल _____ : सूर्य 3 वर्ष 10 मा 18 दि

घात चक्र

मास _____ : भाद्रपद
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : श्रवण
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : मेष
चन्द्र _____ : मिथुन
मंगल _____ : वृष
बुध _____ : मीन
गुरु _____ : मिथुन
शुक्र _____ : कर्क
शनि _____ : मीन
राहु _____ : सिंह

Rainstar Jyotish Kendra

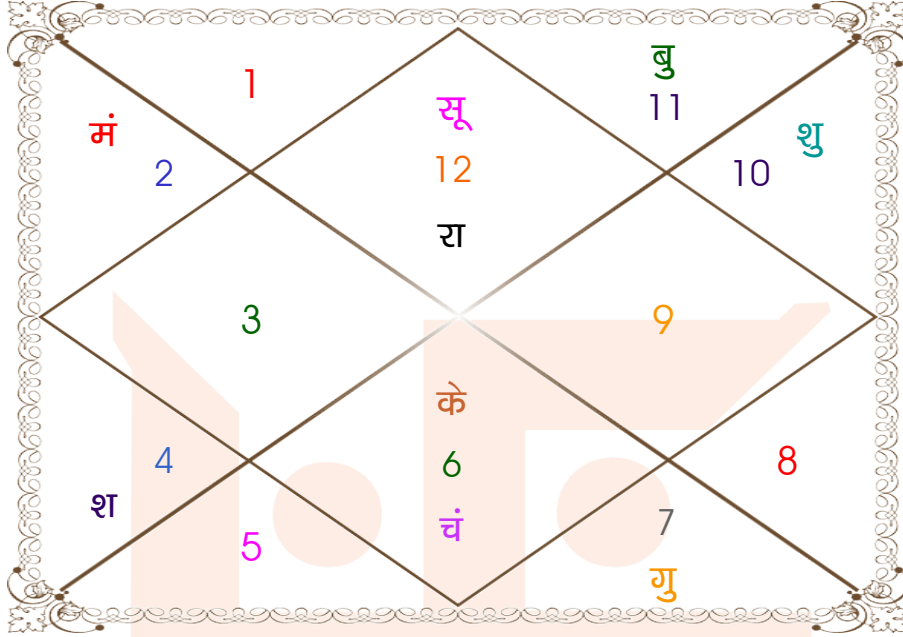
Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

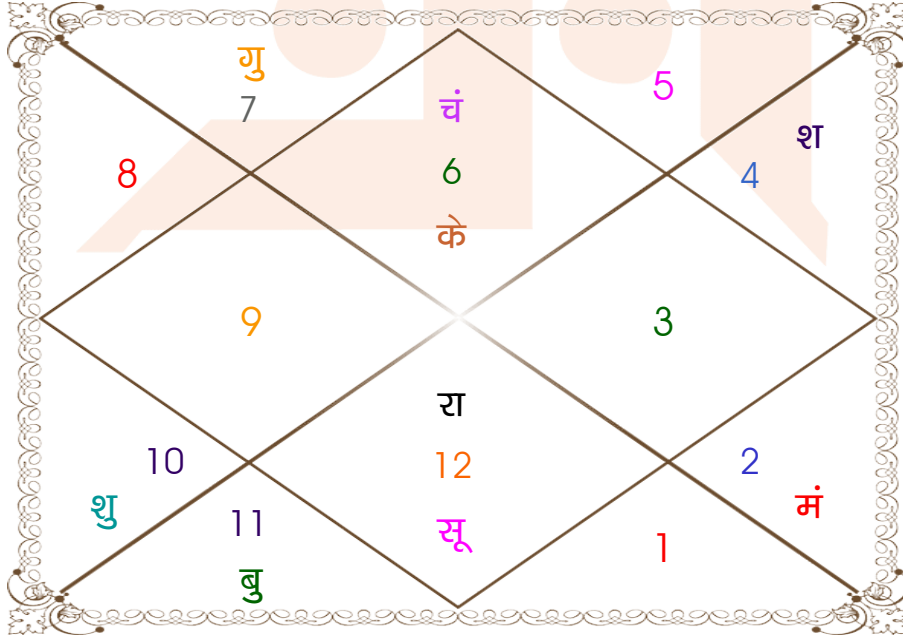
pankajkumar.dadieya@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

रा ल सू		मं	
बु			श
शु			
		गु	के चं

लग्न कुण्डली

मं		सू ल	रा
			बु
श			शु
	चं के	गु	

विंशोत्तरी
सूर्य 3वर्ष 10मा 18दि
सूर्य

15/03/2006

02/02/2124

सूर्य	31/01/2010
चन्द्र	01/02/2020
मंगल	31/01/2027
राहु	31/01/2045
गुरु	31/01/2061
शनि	01/02/2080
बुध	31/01/2097
केतु	02/02/2104
शुक्र	02/02/2124

योगिनी
सिद्धा 4वर्ष 6मा 11दि
भामरी

24/09/2024

24/09/2028

भामरी	05/03/2025
भद्रिका	24/09/2025
उल्का	26/05/2026
सिद्धा	06/03/2027
संकटा	25/01/2028
मंगला	05/03/2028
पिंगला	25/05/2028
धान्या	24/09/2028

Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

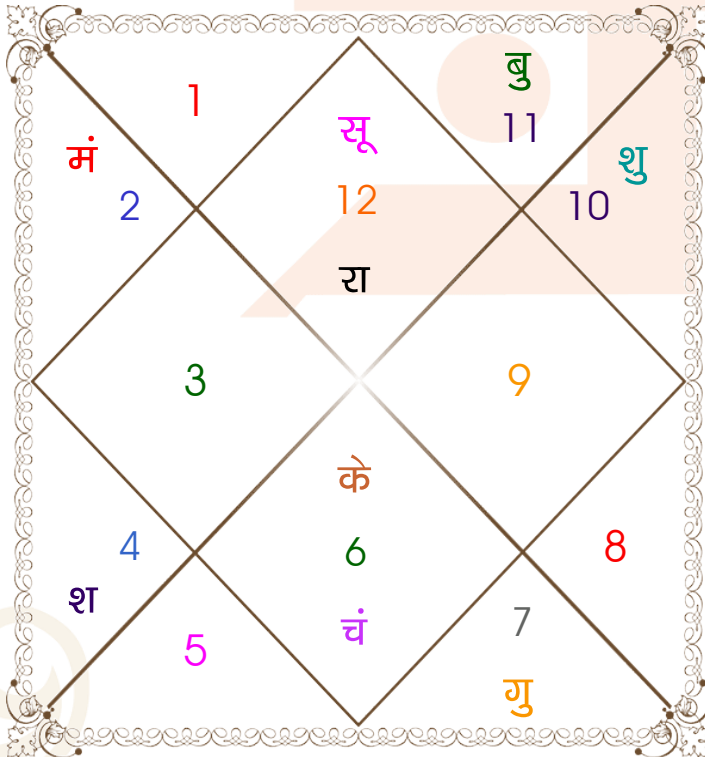
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	14:49:05	506:35:41	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	---
सूर्य			मीन	00:23:30	00:59:47	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			कन्या	01:22:12	11:52:37	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	मित्र राशि
मंगल			वृष	19:11:32	00:32:43	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	सम राशि
बुध	व	अ	कुंभ	24:34:46	00:55:55	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	सम राशि
गुरु	व		तुला	24:45:07	00:01:56	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			मक	14:20:15	00:54:21	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
शनि	व		कर्क	10:50:57	00:02:17	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	सूर्य	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	10:21:57	00:00:21	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	सूर्य	सम राशि
केतु	व		कन्या	10:21:57	00:00:21	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष			कुंभ	17:33:09	00:03:23	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	सूर्य	---
नेप			मक	24:40:16	00:01:56	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	---
प्लूटो			धनु	02:45:14	00:00:29	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	11:45:41	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	बुध	--

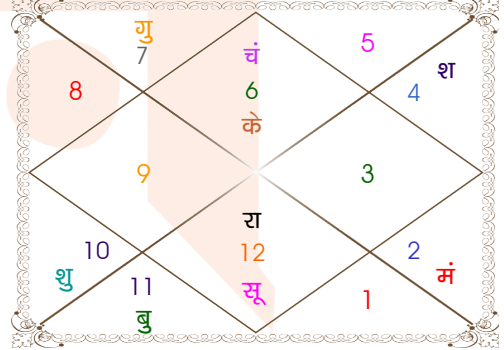
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:56:36

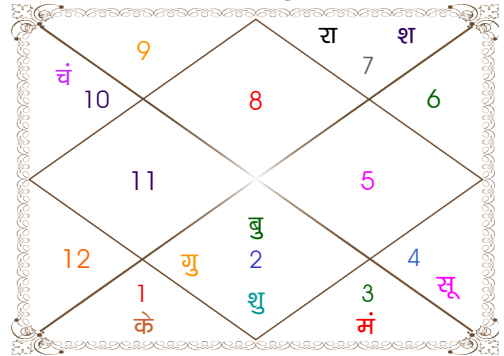
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadleya@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 29:18:31	मीन 14:49:05
2	मीन 29:18:31	मेष 13:47:57
3	मेष 28:17:23	वृष 12:46:49
4	वृष 27:16:15	मिथुन 11:45:41
5	मिथुन 27:16:15	कर्क 12:46:49
6	कर्क 28:17:23	सिंह 13:47:57
7	सिंह 29:18:31	कन्या 14:49:05
8	कन्या 29:18:31	तुला 13:47:57
9	तुला 28:17:23	वृश्चिक 12:46:49
10	वृश्चिक 27:16:15	धनु 11:45:41
11	धनु 27:16:15	मकर 12:46:49
12	मकर 28:17:23	कुम्भ 13:47:57

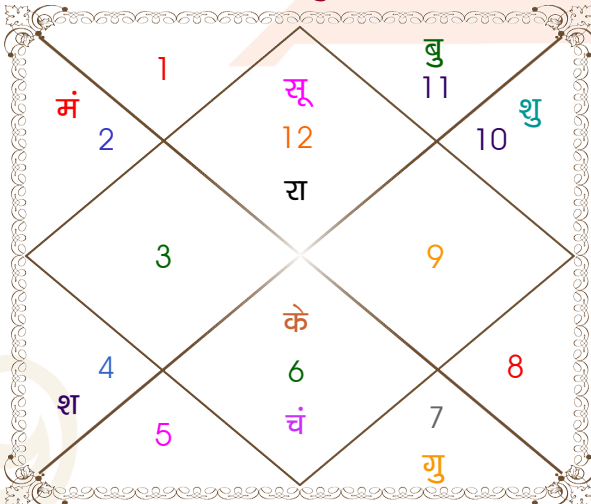
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	14:49:05
2	मेष	20:36:34
3	वृष	17:55:31
4	मिथुन	11:45:41
5	कर्क	06:22:13
6	सिंह	06:05:30
7	कन्या	14:49:05
8	तुला	20:36:34
9	वृश्चिक	17:55:31
10	धनु	11:45:41
11	मकर	06:22:13
12	कुम्भ	06:05:30

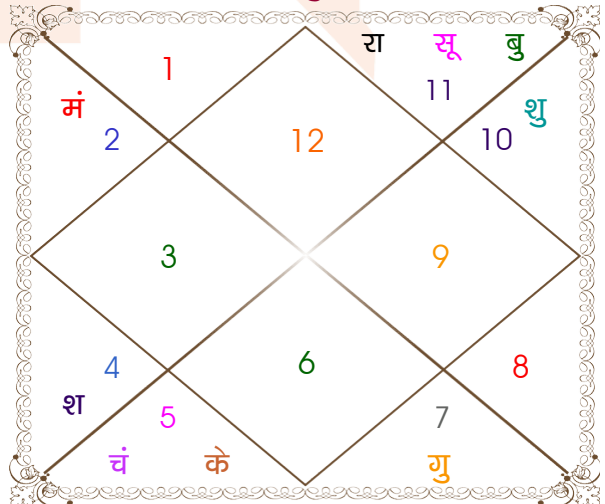
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	
उत्तराषाढा श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	
कृतिका रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

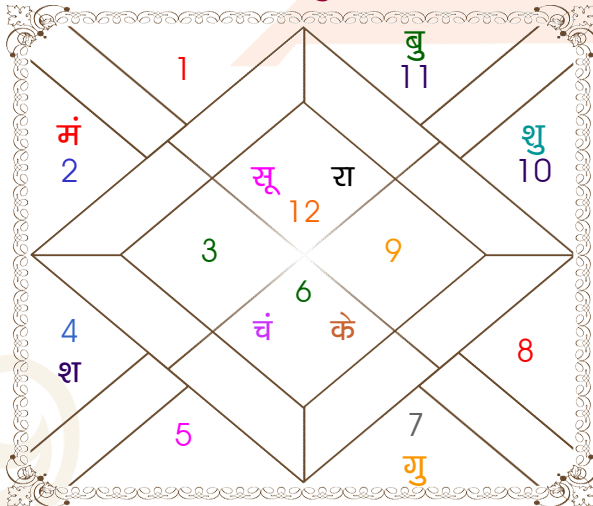
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत मुदित उपवेशन 7.80 68 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	मृत मुदित शयन 3.08 71 %
मंगल	भातृ	भातृ	कुमार शक्त शयन 0.96 33 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	मृत विकल भोजन 0.00 54 %
गुरु	आत्मा	धन	मृत खल गमन 2.73 34 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा मुदित शयन 4.77 68 %
शनि	पुत्र	आयु	वृद्ध खल भोजन 2.25 13 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध निपीदित गमन 0.00 28 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध खल शयन 0.00 28 %
कुल			21.58

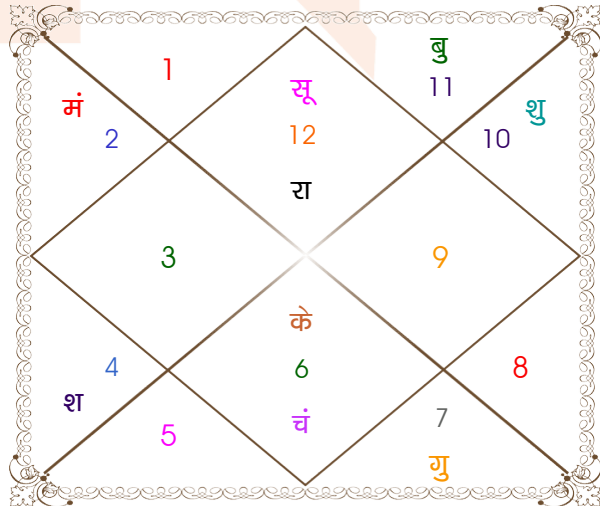
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी

चलित कुंडली



लग्न-चलित



Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 10 मास 18 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
15/03/2006	31/01/2010	01/02/2020	31/01/2027	31/01/2045
31/01/2010	01/02/2020	31/01/2027	31/01/2045	31/01/2061
00/00/0000	चंद्र 02/12/2010	मंगल 29/06/2020	राहु 14/10/2029	गुरु 21/03/2047
00/00/0000	मंगल 03/07/2011	राहु 17/07/2021	गुरु 08/03/2032	शनि 01/10/2049
00/00/0000	राहु 01/01/2013	गुरु 23/06/2022	शनि 13/01/2035	बुध 07/01/2052
15/03/2006	गुरु 03/05/2014	शनि 02/08/2023	बुध 02/08/2037	केतु 13/12/2052
गुरु 08/12/2006	शनि 02/12/2015	बुध 29/07/2024	केतु 20/08/2038	शुक्र 14/08/2055
शनि 20/11/2007	बुध 02/05/2017	केतु 25/12/2024	शुक्र 20/08/2041	सूर्य 01/06/2056
बुध 25/09/2008	केतु 01/12/2017	शुक्र 25/02/2026	सूर्य 15/07/2042	चंद्र 01/10/2057
केतु 31/01/2009	शुक्र 02/08/2019	सूर्य 02/07/2026	चंद्र 13/01/2044	मंगल 07/09/2058
शुक्र 31/01/2010	सूर्य 01/02/2020	चंद्र 31/01/2027	मंगल 31/01/2045	राहु 31/01/2061
शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
31/01/2061	01/02/2080	31/01/2097	02/02/2104	02/02/2124
01/02/2080	31/01/2097	02/02/2104	02/02/2124	00/00/0000
शनि 04/02/2064	बुध 29/06/2082	केतु 29/06/2097	शुक्र 03/06/2107	सूर्य 21/05/2124
बुध 14/10/2066	केतु 27/06/2083	शुक्र 29/08/2098	सूर्य 02/06/2108	चंद्र 20/11/2124
केतु 23/11/2067	शुक्र 26/04/2086	सूर्य 04/01/2099	चंद्र 01/02/2110	मंगल 28/03/2125
शुक्र 22/01/2071	सूर्य 03/03/2087	चंद्र 05/08/2099	मंगल 03/04/2111	राहु 20/02/2126
सूर्य 04/01/2072	चंद्र 01/08/2088	मंगल 01/01/2100	राहु 03/04/2114	गुरु 16/03/2126
चंद्र 05/08/2073	मंगल 30/07/2089	राहु 20/01/2101	गुरु 02/12/2116	00/00/0000
मंगल 13/09/2074	राहु 16/02/2092	गुरु 27/12/2101	शनि 02/02/2120	00/00/0000
राहु 20/07/2077	गुरु 24/05/2094	शनि 05/02/2103	बुध 03/12/2122	00/00/0000
गुरु 01/02/2080	शनि 31/01/2097	बुध 02/02/2104	केतु 02/02/2124	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 3 वर्ष 10 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र 25/12/2024 25/02/2026	मंगल - सूर्य 25/02/2026 02/07/2026	मंगल - चंद्र 02/07/2026 31/01/2027	राहु - राहु 31/01/2027 14/10/2029	राहु - गुरु 14/10/2029 08/03/2032
शुक्र 06/03/2025 सूर्य 28/03/2025 चंद्र 02/05/2025 मंगल 27/05/2025 राहु 30/07/2025 गुरु 25/09/2025 शनि 01/12/2025 बुध 31/01/2026 केतु 25/02/2026	सूर्य 03/03/2026 चंद्र 14/03/2026 मंगल 21/03/2026 राहु 09/04/2026 गुरु 26/04/2026 शनि 17/05/2026 बुध 04/06/2026 केतु 11/06/2026 शुक्र 02/07/2026	चंद्र 20/07/2026 मंगल 02/08/2026 राहु 03/09/2026 गुरु 01/10/2026 शनि 04/11/2026 बुध 04/12/2026 केतु 16/12/2026 शुक्र 21/01/2027 सूर्य 31/01/2027	राहु 28/06/2027 गुरु 07/11/2027 शनि 11/04/2028 बुध 29/08/2028 केतु 25/10/2028 शुक्र 08/04/2029 सूर्य 27/05/2029 चंद्र 17/08/2029 मंगल 14/10/2029	गुरु 08/02/2030 शनि 26/06/2030 बुध 29/10/2030 केतु 19/12/2030 शुक्र 14/05/2031 सूर्य 27/06/2031 चंद्र 08/09/2031 मंगल 29/10/2031 राहु 08/03/2032
राहु - शनि 08/03/2032 13/01/2035	राहु - बुध 13/01/2035 02/08/2037	राहु - केतु 02/08/2037 20/08/2038	राहु - शुक्र 20/08/2038 20/08/2041	राहु - सूर्य 20/08/2041 15/07/2042
शनि 20/08/2032 बुध 15/01/2033 केतु 16/03/2033 शुक्र 06/09/2033 सूर्य 28/10/2033 चंद्र 23/01/2034 मंगल 24/03/2034 राहु 27/08/2034 गुरु 13/01/2035	बुध 25/05/2035 केतु 19/07/2035 शुक्र 21/12/2035 सूर्य 05/02/2036 चंद्र 23/04/2036 मंगल 16/06/2036 राहु 03/11/2036 गुरु 07/03/2037 शनि 02/08/2037	केतु 24/08/2037 शुक्र 27/10/2037 सूर्य 15/11/2037 चंद्र 17/12/2037 मंगल 08/01/2038 राहु 07/03/2038 गुरु 27/04/2038 शनि 27/06/2038 बुध 20/08/2038	शुक्र 19/02/2039 सूर्य 15/04/2039 चंद्र 15/07/2039 मंगल 17/09/2039 राहु 28/02/2040 गुरु 23/07/2040 शनि 13/01/2041 बुध 17/06/2041 केतु 20/08/2041	सूर्य 05/09/2041 चंद्र 03/10/2041 मंगल 22/10/2041 राहु 10/12/2041 गुरु 23/01/2042 शनि 16/03/2042 बुध 02/05/2042 केतु 21/05/2042 शुक्र 15/07/2042
राहु - चंद्र 15/07/2042 13/01/2044	राहु - मंगल 13/01/2044 31/01/2045	गुरु - गुरु 31/01/2045 21/03/2047	गुरु - शनि 21/03/2047 01/10/2049	गुरु - बुध 01/10/2049 07/01/2052
चंद्र 29/08/2042 मंगल 30/09/2042 राहु 21/12/2042 गुरु 04/03/2043 शनि 30/05/2043 बुध 16/08/2043 केतु 17/09/2043 शुक्र 17/12/2043 सूर्य 13/01/2044	मंगल 05/02/2044 राहु 02/04/2044 गुरु 24/05/2044 शनि 23/07/2044 बुध 16/09/2044 केतु 08/10/2044 शुक्र 11/12/2044 सूर्य 30/12/2044 चंद्र 31/01/2045	गुरु 15/05/2045 शनि 15/09/2045 बुध 04/01/2046 केतु 18/02/2046 शुक्र 28/06/2046 सूर्य 06/08/2046 चंद्र 10/10/2046 मंगल 24/11/2046 राहु 21/03/2047	शनि 15/08/2047 बुध 24/12/2047 केतु 16/02/2048 शुक्र 19/07/2048 सूर्य 03/09/2048 चंद्र 19/11/2048 मंगल 12/01/2049 राहु 31/05/2049 गुरु 01/10/2049	बुध 27/01/2050 केतु 16/03/2050 शुक्र 01/08/2050 सूर्य 11/09/2050 चंद्र 19/11/2050 मंगल 07/01/2051 राहु 11/05/2051 गुरु 29/08/2051 शनि 07/01/2052

Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु 07/01/2052 13/12/2052	गुरु - शुक्र 13/12/2052 14/08/2055	गुरु - सूर्य 14/08/2055 01/06/2056	गुरु - चंद्र 01/06/2056 01/10/2057	गुरु - मंगल 01/10/2057 07/09/2058
केतु 27/01/2052 शुक्र 24/03/2052 सूर्य 10/04/2052 चंद्र 09/05/2052 मंगल 28/05/2052 राहु 19/07/2052 गुरु 02/09/2052 शनि 26/10/2052 बुध 13/12/2052	शुक्र 25/05/2053 सूर्य 12/07/2053 चंद्र 01/10/2053 मंगल 27/11/2053 राहु 22/04/2054 गुरु 30/08/2054 शनि 31/01/2055 बुध 18/06/2055 केतु 14/08/2055	सूर्य 29/08/2055 चंद्र 22/09/2055 मंगल 09/10/2055 राहु 22/11/2055 गुरु 31/12/2055 शनि 15/02/2056 बुध 28/03/2056 केतु 14/04/2056 शुक्र 01/06/2056	चंद्र 12/07/2056 मंगल 09/08/2056 राहु 22/10/2056 गुरु 25/12/2056 शनि 13/03/2057 बुध 21/05/2057 केतु 18/06/2057 शुक्र 07/09/2057 सूर्य 01/10/2057	मंगल 21/10/2057 राहु 12/12/2057 गुरु 26/01/2058 शनि 21/03/2058 बुध 08/05/2058 केतु 28/05/2058 शुक्र 24/07/2058 सूर्य 10/08/2058 चंद्र 07/09/2058
गुरु - राहु 07/09/2058 31/01/2061	शनि - शनि 31/01/2061 04/02/2064	शनि - बुध 04/02/2064 14/10/2066	शनि - केतु 14/10/2066 23/11/2067	शनि - शुक्र 23/11/2067 22/01/2071
राहु 17/01/2059 गुरु 14/05/2059 शनि 30/09/2059 बुध 01/02/2060 केतु 23/03/2060 शुक्र 16/08/2060 सूर्य 29/09/2060 चंद्र 11/12/2060 मंगल 31/01/2061	शनि 24/07/2061 बुध 27/12/2061 केतु 01/03/2062 शुक्र 31/08/2062 सूर्य 25/10/2062 चंद्र 24/01/2063 मंगल 29/03/2063 राहु 10/09/2063 गुरु 04/02/2064	बुध 22/06/2064 केतु 18/08/2064 शुक्र 29/01/2065 सूर्य 19/03/2065 चंद्र 09/06/2065 मंगल 06/08/2065 राहु 31/12/2065 गुरु 11/05/2066 शनि 14/10/2066	केतु 07/11/2066 शुक्र 13/01/2067 सूर्य 02/02/2067 चंद्र 08/03/2067 मंगल 01/04/2067 राहु 31/05/2067 गुरु 24/07/2067 शनि 26/09/2067 बुध 23/11/2067	शुक्र 03/06/2068 सूर्य 30/07/2068 चंद्र 04/11/2068 मंगल 10/01/2069 राहु 03/07/2069 गुरु 04/12/2069 शनि 05/06/2070 बुध 16/11/2070 केतु 22/01/2071
शनि - सूर्य 22/01/2071 04/01/2072	शनि - चंद्र 04/01/2072 05/08/2073	शनि - मंगल 05/08/2073 13/09/2074	शनि - राहु 13/09/2074 20/07/2077	शनि - गुरु 20/07/2077 01/02/2080
सूर्य 09/02/2071 चंद्र 10/03/2071 मंगल 30/03/2071 राहु 21/05/2071 गुरु 06/07/2071 शनि 30/08/2071 बुध 18/10/2071 केतु 08/11/2071 शुक्र 04/01/2072	चंद्र 22/02/2072 मंगल 26/03/2072 राहु 21/06/2072 गुरु 06/09/2072 शनि 07/12/2072 बुध 27/02/2073 केतु 01/04/2073 शुक्र 07/07/2073 सूर्य 05/08/2073	मंगल 28/08/2073 राहु 28/10/2073 गुरु 21/12/2073 शनि 23/02/2074 बुध 21/04/2074 केतु 15/05/2074 शुक्र 22/07/2074 सूर्य 11/08/2074 चंद्र 13/09/2074	राहु 17/02/2075 गुरु 05/07/2075 शनि 17/12/2075 बुध 13/05/2076 केतु 12/07/2076 शुक्र 02/01/2077 सूर्य 23/02/2077 चंद्र 21/05/2077 मंगल 20/07/2077	गुरु 21/11/2077 शनि 16/04/2078 बुध 25/08/2078 केतु 18/10/2078 शुक्र 22/03/2079 सूर्य 07/05/2079 चंद्र 23/07/2079 मंगल 15/09/2079 राहु 01/02/2080

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

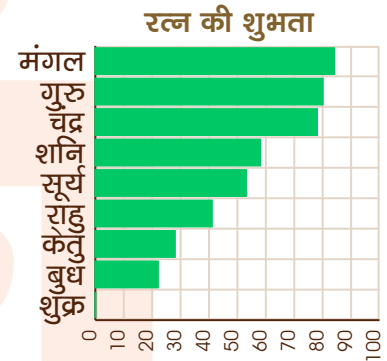
मूलांक	6
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 8
शत्रु अंक	1, 7,
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	84%	पराक्रम, धन, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	80%	दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	78%	दम्पति, सन्तति सुख
नीलम	शनि	58%	सन्तति सुख, धनार्जन, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	53%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	41%	रोग, दुर्घटना
लहसुनिया	केतु	28%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय
पन्ना	बुध	22%	व्यय, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
हीरा	शुक्र	0%	हानि, पराक्रम हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	31/01/2010	66%	84%	91%	22%	86%	0%	41%	16%	3%
चंद्र	01/02/2020	59%	91%	84%	34%	80%	0%	58%	16%	3%
मंगल	31/01/2027	59%	84%	97%	0%	86%	0%	58%	16%	41%
राहु	31/01/2045	31%	66%	72%	22%	80%	9%	64%	58%	3%
गुरु	31/01/2061	59%	84%	91%	0%	92%	0%	58%	41%	28%
शनि	01/02/2080	31%	66%	72%	34%	80%	9%	70%	52%	3%
बुध	31/01/2097	59%	66%	84%	47%	80%	9%	58%	41%	28%
केतु	02/02/2104	31%	66%	91%	22%	80%	9%	41%	16%	52%
शुक्र	02/02/2124	31%	66%	84%	34%	80%	22%	64%	52%	41%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
सम
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

शत्रु से कष्ट
दम्पति
दुर्घटना से बचाव
व्यावसाय
धन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।



Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- पंचम भाव में शनि स्थित है एवं राहु से दृष्ट है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ

भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के हैं। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं। आपके चेहरे पर एक तेज होता है। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते हैं। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप

महत्वाकांक्षी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ों की बातों पर अमल करते हैं। आत्मविश्वासी है, और अपने कार्यों में आपको दक्षता प्राप्त है। साथ ही आपने दृढ़ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यों को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्ठेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपत्ति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षों के उपरान्त आपको कार्यों में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यों पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान

करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं बलवान होते हैं तथा सरलता एवं समानता के भाव से युक्त रहते हैं इनके मुख मंडल पर सौम्यता का भाव रहता है तथा प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक होते हैं। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करते हैं फलतः इनके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहते हैं। नवीन विचारों का सृजन करने में ये सिद्ध हस्त होते हैं तथा लोग भी इनके विचारों से सहमत तथा प्रभावित रहते हैं फलतः सामाजिक मान सम्मान तथा आदर बना रहता है। भौतिकता के प्रति इनके मन में प्रबल आकर्षण रहता है तथा भौतिक सुखों का उपभोग करने में आत्मिक सुख एवं शांति की अनुभूति करते हैं।

इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहती है तथा धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहते हैं। प्राकृतिक दृश्यों के प्रति भी इनके मन में आकर्षण रहता है ये व्यवहार कुशल व्यक्ति होते हैं तथा दक्षता पूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। नवीन वस्तुओं के उत्पादन कार्य में भी ये दक्ष होते हैं तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि तीव्र होगी तथा विभिन्न विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में अपने आपको स्थापित करेंगे। एक विचारक के रूप में भी आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। आप एक भौतिकतावादी व्यक्ति होंगे तथा भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु मानसिक उद्विग्नता यदा कदा बनी रहेगी। आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अतः अपने समस्त महत्वपूर्ण कार्यों को आप उपरोक्त गुणों से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। यदा कदा आप उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे जिससे आपको अनावश्यक समस्याएं तथा परेशानियां उत्पन्न होंगी। अतः उग्रता के भाव की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके आयस्रोत भी एक से अधिक होंगे। भौतिक उपकरणों पर आपका व्यय अधिक होगा तथा इनका उपभोग करने में आपको अत्यधिक आनंद की प्राप्ति होगी। साथ ही यदा कदा आप लोलुपता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकते हैं लेकिन ऐसी प्रवृत्ति का आपको परित्याग करना चाहिए।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी परन्तु धार्मिक कार्यों तथा अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे परन्तु इसी परिपेक्ष्य में आपकी तीर्थ यात्राएं हो सकती हैं। इस प्रकार आप भौतिक सुख एवं वैभव का उपभोग करते हुए समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रुचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा शनि भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया बुद्धिमत्ता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनमें सफलताएं अर्जित करेंगे परन्तु यदा-कदा सही समय पर उचित निर्णय ले सकने के कारण आपको न्यूनाधिक मात्रा में हानि या असफलता का सामना करना पड़ सकता है। आपको उपस्थित कठिन समस्याओं के समाधान में भी कभी-कभी परेशानी का सामना करना पड़ेगा लेकिन स्वपराक्रम एवं परिश्रमी से आप सफलता प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। वैदिक साहित्य, दर्शन एवं धर्म शास्त्र के प्रति आपकी रुचि अन्य मात्रा में ही होगी तथापि आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में पूर्ण रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में प्रयत्नशील रहेंगे तथा कुछ नवीन शोध कार्य या सिद्धांतों का भी प्रतिपादन करेंगे।

पंचमभाव में शनि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रुचि होगी तथा भावनात्मक आकर्षण भी परस्पर विद्यमान होगा लेकिन इस क्षेत्र में आपको प्रयत्न पूर्वक मर्यादा एवं नैतिकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अन्यथा आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्रभावित होगी। अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

संतति भाव में शनि की स्थिति के प्रभाव से संतति प्राप्ति में विलम्ब का सामना करना पड़ेगा किन्तु संतति प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी होगी तथा इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति यद्यपि उनके मन में सम्मान का भाव विद्यमान होगा तथा स्वेच्छा से ही अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में वे कभी-कभी माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना भी कर सकते हैं लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा एवं तनाव के भाव में भी कमी आएगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं करनी चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं से सुरक्षित रह सकें।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में बच्चों की प्रगति सामान्यतया संतोषजनक होगी तथा स्वपरिश्रम से वे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आप भी अपनी ओर से उनके लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे तथा आधुनिक एवं मान्यता प्राप्त संस्थाओं में उन्हें पढ़ाएंगे। इसके अतिरिक्त वे व्यवहार कुशल भी होंगे परन्तु तेजस्वी प्रवृत्ति होने के कारण अन्य सामाजिक जनों से उनका समय-समय पर विवाद भी होता रहेगा जो आपके लिए परेशानी का कारण बनेगी। अतः संतति पक्ष से आपको मध्यम सुख की ही प्राप्ति होगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया कन्या राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी प्रिय वक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यवान एवं विविध कार्यों में चतुर होता है केतु के प्रभाव से उसमें उग्रता तेजस्विता साहस एवं पराक्रम का भाव रहता है लेकिन कर्तव्यों के प्रति उसमें उपेक्षा की भावना रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्यों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा उनके साहसिक कार्यों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। स्वच्छता के प्रति वे विशेष ध्यान देंगी तथा उज्ज्वल वस्त्रों को धारण करेंगी। अपनी बोलचाल में यत्नपूर्वक मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। लेकिन केतु के प्रभाव से वह अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करेंगी तथा परिवार तथा समाज के प्रति कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगी जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी आएगी।

आपकी पत्नी लालिमा युक्त गौरवर्ण की सुंदर महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंगों में पुष्टता तथा सुडौलता विद्यमान होगी जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक लगेगा। इसके अतिरिक्त संगीत एवं कला आदि में भी रुचि होगी तथा पाश्चात्य साहित्य का भी अनुकरण करेंगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध उत्पन्न होंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा तथा प्रेम विवाह की भी संभावना रहेगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम एवं आकर्षण बना रहेगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे। लेकिन पत्नी की तेजस्वी प्रवृत्ति से यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी जिससे संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा। अतः ऐसे समय पर संयम से कार्य लेना चाहिए।

आपका विवाह साधारण परिवार में होगा एवं सामाजिक तथा आर्थिक रूप से वे सामान्य रहेंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके अच्छे संबंध कम ही होंगे तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह की भाव की उपेक्षा रहेगी। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं अवसरों पर एक दूसरे से सलाह सहमति या आवगमन भी कम ही होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा उनकी वह यथोचित सेवा नहीं करेंगी। देवर एवं ननद भी उनसे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग कम ही प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल रहेगी। अतः साझेदारी के कार्यों की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नितत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने, आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेंगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारम्भिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि लग्न स्थान में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि चतुर्थ भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि पंचम सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि चतुर्थ भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

14 मई के बाद दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा है। उनको इच्छित लाभ प्राप्त हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर चतुर्थ स्थान में होगा। उस समय आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण पैतृक संपत्ति, गढ़ा हुआ धन या ससुराल पक्ष से धन प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

14 मई से चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे आपके परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता व पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय शुभ है। यदि वे विवाह योग्य हैं तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं है। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। 29 मार्च के बाद आपका स्वास्थ्य अचानक प्रभावित हो सकता है। लग्न स्थान पर एक साथ राहु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप समय पर खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है।

मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है, उस समय स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का निवारण होना शुरू होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी कुछ और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी।

14 मई के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादश स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा करते रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें एवं दुर्गा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकते हैं। जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा परन्तु दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले जातकों का पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। यदि आप शेयर बजार से जुड़े हैं तो आप को लाभ प्राप्त होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

द्वादश स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे, जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

02 जून के बाद एकादश पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरू हो जाएगा। उस समय छोटे मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। 31 अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो इसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा जिससे सभी लोगों के अंदर साहनुभूति की भावना बनी रहेगी। आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा परन्तु आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके

बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। भाईयोंका सहयोग प्राप्त होगा। समाज में पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 31 अक्टूबर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

02 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा समय है। आपके बच्चे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। पहले बच्चे का विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो शरीर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों के लिए 02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे।

छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जूनबाद लम्बी यात्रा के भी योग बन रहे हैं। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 02 जूनके बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अपनी अध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए मन्त्र पाठ यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं और हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष एकादश भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य से अच्छा रहेगा। कार्य, व्यापार में सफलता तो मिलेगी परन्तु इसके लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। लग्नस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगा। जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके व्यापार पर भी पड़ सकता है। गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु आलस्य के कारण उसका भी लाभ नहीं ले पाएंगे।

जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। साझेदारी में व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग नहीं मिलेगा, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धन लाभ होता रहेगा परन्तु लग्नस्थ शनि के प्रभाव से बीमारी में भी आप का पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों

को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाइयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए ये समय ज्यादा खराब है। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो जाएगा।

जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में अनुकूल बनी रहेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

जून के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु पेट संबंधित रोग दे सकता है अतः उस समय अधिक तला व मसालेदार भोजन न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया है। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं

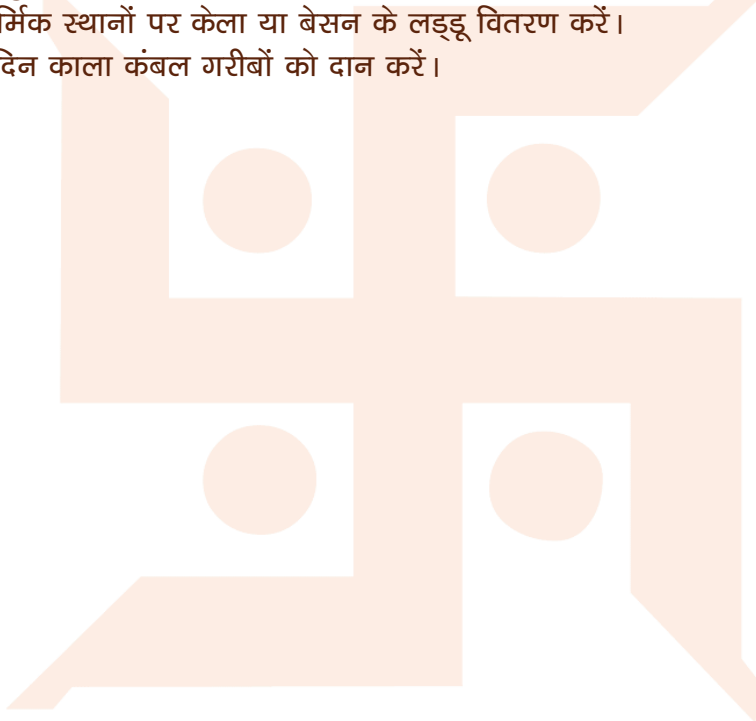
करेंगे। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है।

26 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा परन्तु पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होगी। आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप व दान पुण्य आदि क्रियाओं के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बढ़िया रहेगा। इस अवधि में आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको किसी पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह फिर से अनुकूल हो रहा है। किसी के साथ मिलकर कोई कार्य कर सकते हैं जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। आपको कार्यों में पत्नी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने सफल रहेंगे। एकादश के राहु अचानक धन लाभ करायेंगे। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिल सकते हैं। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार के सदस्यों पर भी आपका अधिक खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ परिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर-परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हाने की सम्भावना है। परिवार में विवाह आदि शुभ कार्य होने से खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की

अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

24 जुलाई के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है परन्तु फरवरी के बाद मौसामजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं। उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें। नहीं तो शरीरिक परेशानी बढ़ सकती है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें। मानसिक रूप से दृढ़ रहें।

गुरु ग्रह का गोचर 24 जुलाई को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 28 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं भी होंगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। आपकी अपने घर से दूर की यात्रा हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि आएगी एवं आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान के शनि कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। मार्च के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपको इष्ट मित्रों का सहयोग मिलने के कारण कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में कठिनाईयों के बावजूद भी विस्तार की संभावनाएं बन रही हैं। साझेदारी के लिए उपयुक्त समय है।

अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरू करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। बड़े अधिकारियों का भी सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। सन्तान या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे।

मार्च के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। 08 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

29 मार्च से आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल व परिश्रम से आगे बढ़ेंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता बनी रहेगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान रहे सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी शुरू हो जाएगी। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें। मार्च के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

08 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। 25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आपकी जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की मदद करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी

धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को बेसन के लड्डू दान करें।

